# 15. कैसे पता करें – क्या हुआ क्या नहीं हुआ

कोई भी बात जब होती है तब हम कैसे जान पाते हैं कि असल में क्या हुआ था? अगर हमारी आंखों देखी बात हो तो हम उसे सच मान लेते हैं जो हमने देखा। पर आजकल तो किताबों, पत्रिकाओं, अखबार, टी. वी., रेडियो से हमें सैकड़ों ऐसी बातें पता चलती रहती हैं जो हमने अपनी आंखों से नहीं देखीं। क्या तुम ऐसी बातों पर पूरा-पूरा विश्वास कर लेते हो? क्या तुम ऐसा कभी सोचते हो कि किसी घटना या व्यक्ति के बारे में अखबार में जो लिखा है या टी. वी. पर जो बताया है वो आधी बात है– कई बातें बताई ही नहीं गईं– और अगर तुम इन छूटी हुई बातों को जानते तो शायद उस घटना या व्यक्ति के बारें में अपने विचार बदल देते?

दरअसल, यह समस्या, कि कैसे पता करें– क्या हुआ क्या नहीं हुआ– इतिहासकारों के सामने बहुत बार आती है। वो तो ऐसी बातों के बारे में लिखते हैं जो पुराने समय में बीत चुकीं और जो उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखीं।

राजाओं और सामंतों के काल के बारे में जब हम पढ़ रहे थे तो हमने कई शिलालेखों और ताम्रपत्रों के बारे में पढ़ा। इन्हीं लेखों से हमें उस समय के गांव व शहरों के बारे में कई बातें मालूम पड़ीं। उस समय के बारे में जानकारी हासिल करने में शिलालेखों ने हमारी खूब मदद की थी।

सल्तनत के बारे में हमें जानकारी कैसे मिलती है? तब इतने सारे शिलालेख या ताम्रपत्र नहीं खुदवाये गये थे। लेकिन सल्तनत के समय में इतिहास की कई पुस्तकें लिखी गईं थी, जिनमें हर सुल्तान के समय में क्या-क्या बातें हुईं, उनके विवरण हमें मिलते हैं।

अक्सर ऐसा भी होता है कि एक ही सुल्तान पर दो या तीन इतिहासकार अलग-अलग बातें बताते हैं। एक कहता है फलां सुल्तान बहुत अच्छा और नेक आदमी था, सारी प्रजा सुख शांति से रहती थी। दूसरा इतिहासकार उसी सुल्तान के बारे में बताता है कि वह बहुत बदमाश था और सारी प्रजा उससे दुखी थी। अब किसकी बातें हम सच मानें?

आज जब हम सल्तनत का इतिहास लिखते हैं तो हमें इस परेशानी से निपटना होता है। उदाहरण के लिये, मान लो हमें मुहम्मद तुग़लक नाम के सुल्तान के बारे में जानना है। हम उसके शासन के बारे में कैसे जान सकते हैं? मालूम करने पर हमें पता चलता है कि उसके शासन के बारे में उस समय के दो इतिहासकारों ने लिखा है, जिनके नाम ज़िया बरनी और एसामी हैं।

बरनी और एसामी की लिखी किताबों को पढ़कर पता चलता है कि सन् 1328 में मुहम्मद तुग़लक ने एक आदेश जारी किया था। उसने देहली के निवासियों को आदेश दिया कि वे देहली से दूर दक्षिण में दौलताबाद जाकर बसें।

*सुल्तान मोहम्मद तुग़लक का आदेश रेखांकित करो। पृष्ठ 171 के मानचित्र में देखो दौलताबाद और दिल्ली कहां पर हैं। ( पाठ में जो और जगहों के नाम आयेंगे उन्हें भी इस नक्शे में ढूंढना )*

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने ऐसा क्यों किया? लोग जब देहली से दौलताबाद गये तो क्या-क्या हुआ? ये बातें बरनी ने अपनी किताब में लिखीं और एसामी ने भी अपनी किताब में लिखीं।

ज़िया बरनी

ज़िया बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फिरुज़शाही' में लिखा–

"एक योजना सुल्तान के दिल में आयी कि दौलताबाद को राजधानी बनाया जाए। यह इसलिये क्योंकि दौलताबाद उसके साम्राज्य के मध्य में है। देहली, गुजरात, लखनऊटी, तिलंग, माबर, द्वारसमुद्र तथा कम्पिला, इस शहर से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। इस विषय में उसने किसी से परामर्श नहीं किया। उसने आदेश दिया कि उसकी अपनी मां और राज्य के सारे बड़े अधिकारी व सेनापति अपने सहायक व विश्वासपात्रों के साथ दौलताबाद की ओर चलें। दरबार के हाथी, घोड़े, खज़ाना तथा बहुमूल्य वस्तुएं दौलताबाद भेज दी जायें। इसके पश्चात सूफी संत व आलिमों (इस्लामी ग्रंथों के अध्ययन करने वाले) तथा देहली के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध लोग दौलताबाद बुलाये गये। जो लोग दौलताबाद गये उन्हें सुल्तान ने खूब सारा धन इनाम में दिया।

एक साल बाद सुल्तान देहली लौटा। उसने आदेश दिया कि देहली तथा आस-पास के कस्बों के निवासियों को काफिलों में दौलताबाद भेजा जाए। देहली वालों के घर उनसे मोल ले लिये जाएं। इन घरों की कीमत खज़ाने से दौलताबाद जाने वालों को दे दी जाए। ताकि वे वहां जाकर अपने लिए घर बनवा लें।

शाही आदेशानुसार देहली तथा आसपास के निवासी दौलताबाद की ओर भेज दिये गये। देहली शहर इस प्रकार खाली हो गया। कुछ दिन तक देहली के सारे दरवाज़े बन्द रहे, शहर में कुत्ते बिल्ली तक न रह पाये।

देहली के निवासी जो वर्षों से वहां रहते चले आ रहे थे, लम्बी यात्रा के कष्ट से रास्ते में ही मर गये। बहुत से लोग, जो कि दौलताबाद पहुंचे अपनी मातृभूमि से बिछड़ने का दुख सहन नहीं कर सके। वे वापस होने की इच्छा में ही मर गये। यद्यपि सुल्तान ने देहली से जाने वाली प्रजा को अत्यधिक इनाम दिये, वह परदेस व कष्टों को सहन न कर सकी।

इसके बाद दूसरे प्रदेशों से आलिमों, सूफियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को लाकर देहली में बसाया। मगर इस प्रकार लोगों के लाने से देहली आबाद न हो सकी।

लगभग पांच छः साल बाद सुल्तान ने आदेश दिया कि जो भी दिल्ली लौटना चाहता है वह लौट सकता है। कुछ लोग लौट गए मगर बहुत से परिवार दौलताबाद में ही बस गये।"

*पुराने समय के इतिहासकार बरनी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ लोगों पर संदेह करने वाला/ बदला लेने की इच्छा रखने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिए बग़ैर काम करने वाला।*

*सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी देहली से दौलताबाद क्यों हटाई– क्या कारण नज़र आता है? क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को देहली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?*

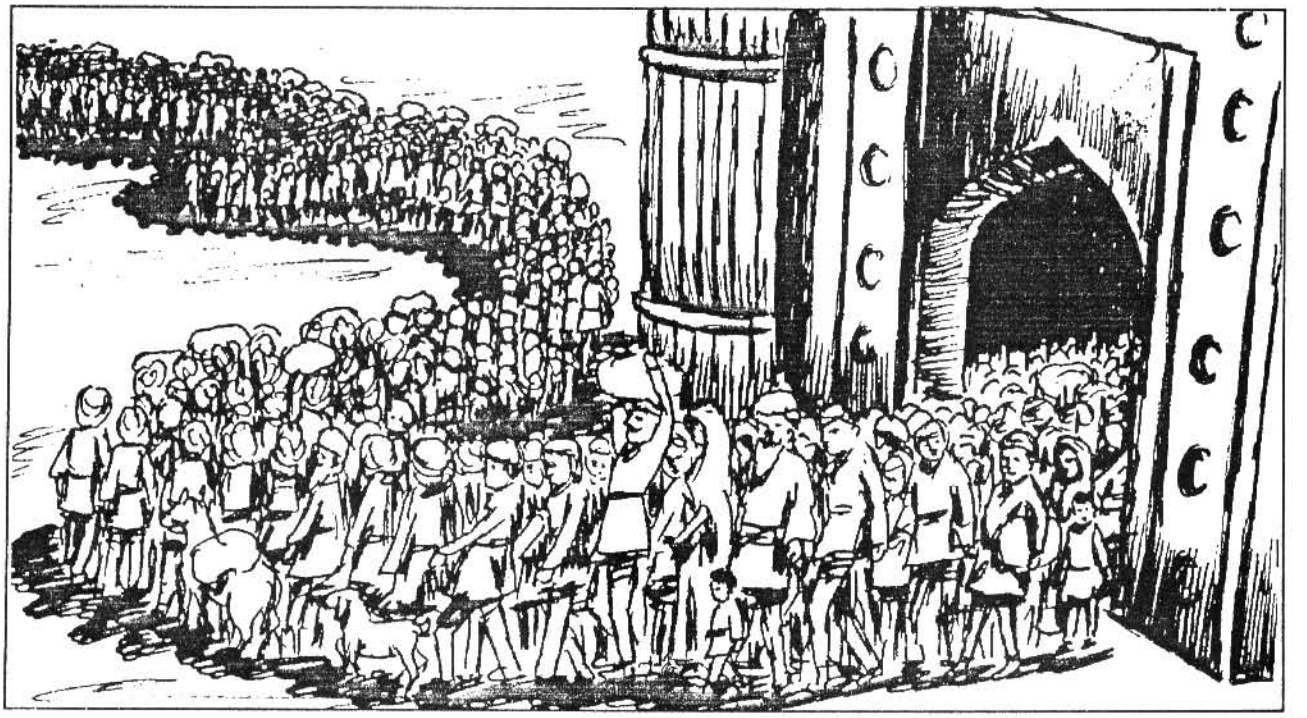

## एसामी

एसामी ने अपनी किताब "फ़ुतुह उस सालातिन" में लिखा–

"सुल्तान को देहली वालों पर संदेह था और वह उनके लिए मन में विष छिपाये रहता था। उसने गुप्त रूप से एक कुत्सित योजना बनाई कि एक महीने में देहली का विनाश कर दिया जाये। उसने सूचना कराई कि- "जो कोई सुल्तान का हितैषी हो वह दौलताबाद की ओर प्रस्थान करे। जो कोई इस आज्ञा का पालन करेगा उसे अत्यधिक संपत्ति मिलेगी, जो कोई इसका पालन न करेगा उसका सिर काट डाला जाएगा।"

उसने आदेश दिया कि देहली में आग लगा दी जाए और सभी लोगों को नगर से बाहर निकाल दिया जाए। परदेवाली स्त्रियों तथा एकांतवासी सूफियों को उनके घरों से बाल पकड़कर निकाला गया। इस प्रकार वे लोग देहली से निकले।

मेरे दादा भी उसी शहर में रहते थे। उनकी उम्र 90 वर्ष थी और वे एकांतवासी संत थे। वे कभी अपने घर से नहीं निकलते थे। वे पहले पड़ाव में ही मर गये। उन्हें वहीं दफन कर दिया गया।

सभी बूढ़े, युवक, स्त्री तथा बालक यात्रा करने के लिए विवश थे। बहुत से बालक दूध बिना मर गये। अनेकों लोगों ने प्यास के कारण प्राण त्याग दिये। उस काफिले में से अत्यधिक कठिनाई सहन करके केवल दसवां भाग ही दौलताबाद पहुंच सका। सुल्तान ने इस तरह एक बसा हुआ शहर नष्ट कर डाला।

जब देहली में कोई न रह गया तो सारे द्वार बन्द कर दिये गये। सुना जाता है कि कुछ समय बाद उस नीच और अत्याचारी बादशाह ने आसपास के गांवों से लोगों को बुलाकर देहली को बसवाया। तोतों और बुलबुलों को बाग से निकालकर कौओं को बसा दिया।

न जाने सुल्तान को किस प्रकार उन निर्दोष लोगों पर संदेह उत्पन्न हो गया कि उसने उनके पूर्वजों की नींव उखाड़ डाली और आज तक उनकी सन्तानों के विनाश में तल्लीन है।"

*पुराने समय के इतिहासकार एसामी का यह वर्णन पढ़ कर तुम्हें सुल्तान मोहम्मद तुग़लक कैसा राजा लगा- अत्याचारी/ संदेह करने वाला/ लोगों का भला चाहने वाला/ राज्य के हित में सोच समझ के योजना बनाने वाला/ किसी की सलाह लिये बगैर काम करने वाला।*

*सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद क्यों हटाई - क्या कारण नज़र आता है?*

*क्या सुल्तान यह चाहता था कि लोगों को दिल्ली से निकालते समय तरह-तरह के कष्ट पहुंचाये जाएं?*

*तुमने बरनी का अंश पढ़ कर मुहम्मद तुग़लक के बारे में अपनी राय बनाई थी– कि वह कैसा राजा था और क्या चाहता था।*

*अपनी राय को एक बार फिर से पढ़ो। यह बताओ कि एसामी को पढ़ने के बाद तुमने अपनी राय क्या बदल दी? अगर हां तो बताओ कि तुमने अपनी राय क्यों बदली?*

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि मुहम्मद तुग़लक की योजना के बारे में कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी। जैसे सुल्तान ने लोगों को देहली से दौलताबाद जाने का आदेश दिया। यह बात दोनों की किताब में लिखी है।

पर देहली से दौलताबाद जाने की घटना के बारे में बरनी कई ऐसी बातें लिखता है जो एसामी नहीं लिखता। जैसे बरनी लिखता है कि सुल्तान अपने राज्य की राजधानी, बीचों बीच बनाना चाहता था, इसलिए उसने लोगों को दौलताबाद भेजा।

पर एसामी के अनुसार सुल्तान के मन में ऐसा विचार नहीं था। एसामी के अनुसार सुल्तान लोगों को कष्ट देना चाहता था। इसलिए उसने देहली खाली करवाई।

यह हमारे लिए परेशानी की बात है। अब हम यह कैसे जानें कि सुल्तान के मन में वास्तव में क्या विचार था? इस विषय में हम बहुत पक्की तरह से कुछ नहीं कह सकते हैं। ऐसी कठिनाई बहुत बार हमारे सामने आती है।

*नीचे कई बातें लिखी हैं। तुम उन्हें ध्यान से पढ़ो और बताओ कि कौन सी बातें वे हैं जिन्हें बरनी भी कहता है और एसामी भी–*

*और कौन सी बातें वे हैं जो दोनों में से कोई एक जना ही कहता है:*

*1. जो लोग दौलताबाद गए उन्हें सुल्तान ने इनाम दिया।*

*2. देहली से दौलताबाद जाने में लोगों को काफी कष्ट*

हुआ।

3. सबसे पहले सुल्तान के परिवार व प्रशासन के लोगों को भेजा गया। फिर सूफी सन्तों और विद्वानों को भेजा गया, फिर एक साल बाद आम जनता को भेजा गया।

4. जिसने जाने से इनकार किया उसे मार डाला गया।

5. जो जाने को राज़ी था उसका घर खरीद लिया गया।

6. देहली में कई पीढ़ियों से रहने वाले पुराने लोगों को भेजा गया।

7. देहली को नए लोगों से बसाया गया।

सात में से कितनी बातें दोनों कहते हैं? उन बातों को कोई विद्यार्थी एक साथ पढ़ दे।

जो बातें दोनों जने लिखते हैं उनके बारे में तो हम सोच सकते हैं कि वे ज़रूर हुई होंगी। पर जो बातें एक ही व्यक्ति कह रहा है उनके बारे में हम झट से पक्की तरह नहीं कह सकते कि वे ज़रूर हुई होंगी।

*कोई विद्यार्थी उन बातों को भी पढ़ दे जो बरनी या एसामी में से एक इतिहासकार ही कह रहा है।*

बीते हुए समय के बारे में जब इतिहासकार आज लिखते हैं तो वे अक्सर इस कठिनाई से जूझते हैं। बीते समय के बारे में कुछ बातें तो पक्की तरह से कही जा सकती हैं, पर बहुत सी बातों के बारे में पक्की तरह से नहीं कहा जा सकता।